कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा धान की पूसा सुगन्ध 2511 प्रजाति का सफल अग्र पंक्ति प्रदर्शन

बृजपाल सिंह, राकेश पाण्डे एवं रंजीत सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र
भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर-243 122

कृषि विज्ञान केन्द्र बरेली के तकनीकी सहयोग से ग्राम फरीदापुर इनायत खॉ, बरेली जनपद के श्री देवेन्द्र कुमार पुत्र श्री बॉके लाल ने पूसा नई दिल्ली द्वारा विकसित धान की प्रजाति पूसा सुगन्ध-2511 का एस.आर.आई (श्री) विधि से प्रदर्शन लगाया। यह प्रदर्शन भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा नई दिल्ली के सहयोग से कृषि विज्ञान केन्द्र बरेली के साथ चल रहे राष्ट्रीय प्रसार परियोजना के अन्तर्गत खरीफ 2016 में धान की खेती की थी।

इस किसान के यहॉ प्रदर्शन लगाने की शुरूआत कुछ इस प्रकार शुरू हुईः

जनवरी 2016 में मृदा गैर-सरकारी संगठन एवं फरीदापुर इनायत खॉ गॉव के श्री देवेन्द्र पुत्र श्री बॉके लाल कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से मिलने आये तथा उन्होने अवगत कराया कि उनके गॉव में

2 से 2.5 कु0 प्रति बीघा (30-35 कु0/है0) धान एवं गेहूँ का उत्पादन होता है। उन्होंने यह भी बताया कि धान का 2.5 कु0/बीघा से अधिक किसी किसान का उत्पादन नहीं हो पाता है। चर्चा के दौरान उन्होने अवगत कराया कि सामान्यतया खरीफ में धान की खेती होती है, जोकि पारम्परिक ढंग से बिना किसी खाद उर्वरक के धान की पौध डाल दी जाती है । 15-16 दिन की पौध में यूरिया लगाकर न्यूनतम 25 दिन व अधिकतम 35 दिन पर पौध की रोपाई कर दी जाती है। इस पर कृषि विज्ञान केन्द्र ने उन्हें गॉव में खरीफ 2016 में धान के प्रदर्शन आयोजित कराने की सलाह दी जिसके लिये भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, पूसा से प्राप्त धान की प्रजातियों पी0बी0 1509 तथा पूसा संगन्घ 2511 प्रजातियों का चयन किया गया। इसी समय धान लगाने की एस0आर0आई0 विधि की भी चर्चा हुई, जिस पर पर श्री देवेन्द्र ने अपने खेत में एस0आर0आई0 विधि से धान की प्रजाति पूसा सुगन्ध 2511 का एक बीघा खेत में प्रदर्शन करने हेतु सहमति दी।

श्री देवेन्द्र ने कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह पर स्ट्रेप्टोसाइक्लीन एवं कार्बन्डाजिम से बीज शोधन करके पौध हेतु धान का बीज डाला तथा बहुत डरते-डरते 14 वें दिन पौध की रोपाई की। इतनी छोटी पौध की रोपाई के लिये श्रमिकों को बहुत कठिनाई से तैयार किया गया। रोपाई से पहले खेत में वर्मीकम्पोसट डाली गयी तथा 20 जून 2016 को बीज की विधि अनुसार बुवाई की गयी। गॉव के जिन कृषकों ने उस रोपाई को होते हुए देखा, वे सभी श्री देवेन्द्र की हॅसी बनाने लगे क्योकि अन्य सभी किसानों का यह मानना था कि यह पौध इतनी छोटी है कि 2-3 दिन में सूख कर मर जायेगी। परन्तु कुछ दिन बाद गॉव के लोगों ने जब देखा कि पौध न सिर्फ हरी बनी रही बल्कि उसमें दिन प्रति दिन कल्लों की संख्या बढ़ती जा रही है, तो गॉव के कोने-कोने से किसान खेत को देखने आने लगे। कल्लों की गणना करने पर पया गया कि धान के रोपाई के 35 दिन में एक पौधे से 45 तक कल्ले निकले जो कि सुगन्धित किस्म के चावल की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है। धीरे-धीरे आस-पास के गॉवो तथा कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े अन्य गॉवो के कृषक, श्री देवेन्द्र के खेत को देखने आने लगे एवं सराहना करने लगे। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं मृदा गैर-सरकारी संगठन के सहयोगी भी नियमित रूप से धान के खेत को

देखते रहे एवं आवश्कतानुसार सूचनाओं का आदान-प्रदान करके समयानुसार उपाय करते रहे। एस0आर0आई0 विधि में मुख्यता देशी खादों का प्रयोग किया जाता है परन्तु पर्याप्त मात्रा में दशी खाद उपलब्ध न होने के कारण श्री देवेन्द्र ने देशी खाद एवं रसायनिक खाद का मिलाजुला प्रयोग किया।

गॉव में पारम्परिक विधि से पूसा सुगन्ध-2511 की अधिकतम पैदावार 48.75 कु0/है0 प्राप्त हुई जबकि एस0आर0आई0 विधि से इस प्रजाति की पैदावार 56.87 कु0 प्रति हैक्टेयर प्राप्त हुई। इस प्रकार एक बीघे में इसकी वास्तविक उपज 3.5 कुन्तल प्राप्त हुई जिसकों कृषक ने अगले वर्ष बीज के लिये संभाल कर रख लिया था । गॉव के 12 अन्य कृषकों ने भी अगले वर्ष श्री विधि से उक्त प्रजाति की खेती करने का निर्णय लिया है।